नाम : डॉ लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा

महाविद्यालय का नाम : दुर्गा महाविद्यालय रायपुर *(छ.ग.)*

संकाय : कला

पद नाम : सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

विषय : हिन्दी साहित्य में अनुवाद

दिनांक :18/07/2023

हिन्दी साहित्य में अनुवाद

आदमी की सबसे मुख्य पहचान उसकी बोलने की शक्ति है। वह अपने मन के सुख–दुख की बात दूसरों को बता सकता है। इसका माध्यम है भाषा। अगर संसार के समस्त लोग एक ही भाषा बोलते तो सभी एक दूसरे की बातें आसानी से समझा लेते हैं, मगर प्रत्येक देश में ही अनेक भाषाएँ होती है। सवाल उठता है कि जब दो भिन्न भाषा–भाषी सज्जनों को आपस में वार्तालाप करना पड़ता है तब कौन सा उपाय किया जाये ? इसका कारगार उपाय अनुवाद है।

अनुवाद का शाब्दिक अर्थ है किसी के कहने के बाद कहना। किसी कथन का अनुवर्ती कथन, पुनः कथन अथवा पुनरूक्ति। वर्तमान समय में एक भाषा में कही हुई बात को दूसरी भाषा में कहना या बतलाना अनुवाद कहता है। अनुवाद एक ऐसी तकनीक है जिसका अविष्कार मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति की विडम्बना से बचने के लिए किया था। किसी भाषा में प्राप्त सामग्री का दूसरी भाषा में भाषांतरण अनुवाद है। दूसरे शब्दों में ''एक भाषा में व्यक्त विचारों की यथासंभव समतुल्य और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है''।

अनुवाद की महत्ता का मूल रहस्य यह है कि यही सबसे शक्तिशाली साधन है जो पूरे विश्व को एक सूत्र में बांधता है, प्रत्येक देश और संस्कृति को दूसरे देशों और संस्कृतियों को समझने–समझाने में सहायक होता है, और मानव–ज्ञान और कला की उपलब्धियों से पूरी धरती को परिचित कराता है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भारतेंदु–युग से ही अनुवाद कार्य होता आया है। स्वतंत्र भारत मे तो विज्ञान और तकनालॉजी के क्षेत्र में भी अनुवादक–गण प्रवृत हुए है। मगर अकादमिक स्तर पर अनुवाद–सिद्धांत एवं व्यवहार को अध्ययन का विषय बनाने की आवश्यकता करीब बीस वर्ष पहले ही हिन्दी–क्षेत्र के विशेषज्ञों को अनुभव हुई थी।

आजकल साहित्य के अनुवाद पर गंभीर विचार करते हैं। हिन्दी में भी एक प्रकार का चिंतन जारी है, अंग्रेजी का हिन्दी में या अन्य भारतीय भाषाओं का अनुवाद हिन्दी साहित्य में हुआ है, ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर यह पता चलता है कि हिन्दी कवि अन्य भाषाओं के काव्य का अनुवाद बड़े प्रेम से करते आए हैं।

भिन्न–भिन्न कवियों ने अपने–अपने ढंग से अनुवाद किया है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से हिन्दी आधुनिक आर्य भाषा युग की भाषा है। शौरसेनी, अर्धमागधी घी आदि अपभ्रशों से हिन्दी के विभिन्न रूप निष्पन्न माने जाते हैं। इस नयी भाषा मे प्रारंभ में कुछ लोकगीत रचे गए और संस्कृत व अपभ्रंश रचनाओं का अनुवाद किया गया। अधिकांश कवि संस्कृत के भी अच्छे विद्वान थे। इसलिए उनके हिन्दी काव्य में भी संस्कृत छंदों का अनुवाद ढूंढना कठिन नहीं।

अपभ्रंश एवं मैथिली में समान अधिकार से काव्य रचकर विद्यापति अमर हो गए। उनकी एक उपाधि अभिनव जयदेव की थी। उन्होंने अपने पदावली में जयदेव का अनुवाद और अनुकरण किया था। सगुण भक्तिकाल में संस्कृत काव्य के अनुवाद की धूम मची थी। सूरदास और अष्टछाप के अन्य कवियों ने भागवत के दशम स्कंध की ही बातें ब्रजभाषा में लिखी। वे मुख्यतः अनुवाद ही थी। सूरसागर एक प्रकार से भागवत का अनुवाद है। सूर ने भागवत के प्रत्येक छंद का अनुवाद करने की प्रणाली स्वीकार नहीं की। उन्होंने भागवत की बातें मन में ग्रहण करके उन्हें अपनी कल्पना से रंजित करके ही ब्रजभाषा में प्रस्तुत किया।

तुलसी ने संस्कृत काव्य का आश्रय खूब लिया। रामचरित मानस में उन्होंने स्वंय कहा है कि वाल्मीकि रामायण और अन्य संस्कृत ग्रंथों से सामग्री भी है। समीक्षकों ने तुलसी–कृत संस्कृत अनुवाद का विशेष अध्ययन किया है। राम नरेश त्रिपाठी ने लगभग बहत्तर ग्रंथों की सूची दी है जिनसे तुलसी ने कहीं शब्दानुवाद कर दिया तो कहीं भावानुवाद। कहीं उन्होंने रूपांतरण का सहारा लिया है। शब्दानुवाद का उदाहरण।

आनंद रामायण :

धृत्वा धैर्य गुहः प्राह विषादं यज सांप्रंत
एवं सुमंत्र सदा विद्वान् धैर्य धर परार्धतिव्।

तुलसी :

धीरज धरि तब कहहि निषाद्।
टब सुमंत्र परिहरहु विषाद।।

तुम पंडित परमारथ ज्ञाता।

धरहु धीर लखि विमुख विधाता।।

केंवट–प्रसंग पर मांगी नाव ने केवट आना, वाली पंक्तियां तुलसी की अपनी नहीं अध्यात्म रामायण की पंक्तियों का अनुवाद है।

भक्तिकाल और रीतिकाल दोनों का प्रतिनिधित्व करने वाले केशवदास ने अपने को पंडितों के कुल में जात मन्दमति कहा है। उन्होंने, 'मंदमति' शब्द का तो विनय सूचित करने के लिए प्रयोग किया है। वे संस्कृत काव्य और अलंकार शास्त्रादि के अच्छे ज्ञाता थे। इसी ज्ञान के आधार पर उन्होंने हिन्दी में काव्य एवं काव्यशास्त्रीय ग्रंथ लिखे। उनके प्रमुख ग्रंथ रामचन्द्रिका में कितने ही संस्कृत काव्यों के छंदों का अनुवाद मिलता है। केशवदास और अन्य रीतिकालीन आचार्य कवियों ने संस्कृत के काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का विभिन्न प्रकार से अनुवाद किया। राजा जसवंत सिंह ने संस्कृत के चन्द्रालोक का अनुवाद किया था। विशद अध्ययन से अन्य मूल कवि और हिन्दी अनुवाद पर प्रकाश डाल सकेंगें।

(6) रीतिकाल के सबसे लोकप्रिय एवं गागर में सागर भरने वाले कवि बिहारी लाल अपनी मौलिक उक्तियों से पाठकों को प्रभावित करते हैं। किंतु वे ऐसे चंतुर अनुवादक हैं कि उनका कथन अनुवाद ही नहीं लगता। उन्होंने आर्या–सप्तशती, गाथासप्तशती, अमरूकशक आदि के पद्याों का भावानुवाद बड़ी कुशलता से किया है। बिहारी का 'नहिं पराग नहिं मधुर मधु' वाला दोहा तक अनुवाद है। उसका मूल है –

यावन्न कोषविकासं प्राप्नोतीषद् मालती कलिका।

मकरंद–पान–लोभिन्! भ्रमर! तवदेव मर्ययसि।।

उसी तरह प्रसिद्ध दूसरा दोहा है –

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।

वा खाये बौराइ नर या पाये बौराय।।

यह भी अनुवाद है। मूल देखिए –

स्वर्ण बहु यस्यास्ति तस्य न स्यात् कथं मदः।

नामसाम्याहो यस्य धुस्तूरोपि मदप्रदः।।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के युग–निर्माता भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने मुद्राराक्षम, चंडकौशिक, कर्पूरमंजरी, चंद्रावली आदि नाटकों का अनुवाद किया। उन्होंने अंग्रेजों के मर्चेंट, ऑफ वेनिक का रूपान्तरण किया–'दुर्लभ बंधु'। जब पश्चिमी साहित्य अर्थात अंग्रेजी साहित्य की नई विधाओं और रचनाओं का परिचय प्राप्त हुआ तब हिन्दी कवि और नाटककार अंग्रेजी से अनुवाद करने लगे। खण्डकाव्य धारा के प्रवर्तक श्रीधर पाठक ने गोल्डस्मिथ के Deseted village, Hermit आदि का अनुवाद किया। आगे शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद लाला सीता राम बी0ए0 ने किया। इनका अनुवाद दूसरों ने भी किया है। बच्चन और रांगेय राघव के अनुवाद तो प्रसिद्ध हैं।

द्विवेदी–युग में अनेक स्तरीय निबंधों और उपन्यासों का अनुवाद हिन्दी में हुआ। स्वंय महावीर प्रसाद द्विवेदी और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कई अंग्रेजी निबंधों का अनुवाद किया। यहां तक कि कुछ विद्वान चिंतामणि के निबंधों तक को अनुवाद मानते हैं। शुक्ल जी ने अंग्रेजी के 'लाइट ऑफ एशिया' काव्य का अनुवाद ब्रजभाषा में 'बुद्धचरित' नाम से किया था।

द्विवेदी–युग और उसके बाद के वर्षों में अनुवाद की धूम मच गई। भारतीय भाषाओं में बंगला से ही सबसे अधिक अनुवाद किया गया। रवीन्द्रनाथ टैगोर और द्विजेंद्रलाल राय ही सबसे अधिक अनूदित हुए। टैगोर की सारी रचनाएं विभिन्न लोगों द्वारा अनूदित की गई। बंगला के बंकिमचन्द्र और शरच्चंद्रजी के उपन्यास भी अनेक लोगों द्वारा अनूदित किये गए। गीतांजली सबसे अधिक बार अनूदित बंगला कविता हे। शीघ्र ही अन्य भाषाओं के प्रमुख ग्रंथ हिन्दी में अनूदित होने लगे।

देश के स्वाधीनता आंदोलन ने सारी भारतीय भाषाओं और हिन्दी को परस्पर जोड़ दिया तो उसके फलस्वरूप अन्य भाषाओं से हिन्दी और हिन्दी से अन्य भाषाओं में अनुवाद का कम शीघ्रतर हो गया।

वर्तमान युग में अनुवाद और रूपान्तरण की बड़ी धूम है। आदान–प्रदान के अन्तर्गत यह चल रहा है। अनेक विदेशी भाषाओं की कविता, उपन्यास आदि का, खासकर अंग्रेजी से भिन्न भाषाओं की रचनाओं का अनुवाद हिन्दी में हो रहा है। रूसी एवं दक्षिण अफ्रीकी रचनाएं अब सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। इस अनुवाद प्रक्रिया से हिन्दी साहित्य के आयाम विस्तृत हो रहे हैं। भाषा की अभिव्यंजना

शक्ति बढ़ी है। अभिव्यक्ति की विविध भंगिमाओं का विकास भी हो सका है। सबसे बढ़कर हिन्दी साहित्य का कोष अत्यंत धनी बनता जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर–अनुवाद भाषाएँ–समस्याएँ, ज्ञान गंगा, दिल्ली–1992।
2. भारती–धर्मवीर – (1) देशान्तर (विदेशी कविताओं का अनुवाद), भारतीय ज्ञानपीठ प्रथम संस्करण।
3. डॉ.भोलानाथ तिवारी–अनुवाद–कला, शब्दाकार, दिल्ली संस्करण–1997
4. डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर–अनुवाद कला प्रभात प्रकाशन, दिल्ली–2001
5. वृषभ प्रसाद जैन–अनुवाद और मशीनी अनुवाद–सारांश प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण–1995